इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak

(A Central University established by an Act of Parliament)

गुरु पुर्णिमा के शुभ अवसर पर

तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय व्यास महोत्सव

दिनांक: 24 - 26 जुलाई, 2021

विषय-" गुरु की महत्ता "

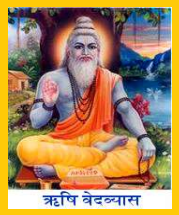

ऋषि वेदव्यास

आयोजक

योग संकाय एवं योग विभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,

अमरकंटक (मध्यप्रदेश)

संरक्षक

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

माननीय कुलपति

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

(म.प्र.)

निदेशक

प्रो. आलोक श्रोत्रिय

संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष,योग

संयोजक

प्रो. जितेंद्र कुमार शर्मा

सह संयोजक

डॉ.प्रवीण कुमार गुप्ता

आयोजन सचिव

- डॉ हरेराम पाण्डेय

संयुक्त आयोजन सचिव

- डॉ. श्याम सुंदर पाल
- डॉ.संदीप ठाकरे
- डॉ. नीलम श्रीवास्तव

तकनीकी सहयोग

- श्री अरविंद गौतम

कार्यालयीय सहयोग

- श्री गुरुनाथ करनाल
- श्री विवेक नेगी

अवधारणा

प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। जीवन निर्माण केलिए योग्य गुरुओं से शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक था। वर्णाश्रम-धर्म तथा पुरुषार्थ-चतुष्ट्य की चरितार्थता में शिक्षा की अनिवार्यता स्पष्ट थी। भारतीय जीवन दर्शन में सत्य, अहिंसा,त्याग और परोपकार ये चार महनीय मूल्य थे जिन पर सम्पूर्ण भारतीय आर्ष संस्कृति आधारित थी।

भारतीय आदर्श राज्य की स्थापना के लिए चार बातें आवश्यक समझी गयी- 1. स्वतंत्र अखण्ड देश 2. आर्थिक समृद्धि 3. सभी वर्गों को उचित न्याय 4. ज्ञान- विज्ञान की उन्नति। इन चारों के लिए उपयुक्त शिक्षा की नितान्त आवश्यकता थी और शिक्षा के लिए योग्य गुरु की।

भारतीय आर्ष परंपरा में ज्ञान प्रदाता के रूप मे गुरु, आचार्य, उपाध्याय आदि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग मिलता है। पर गुरु शब्द अत्यंत व्यापक एवं विशिष्ट अर्थ को सन्निविष्ट किये हुये है। धार्मिक सम्प्रदायों तथा अध्यात्म साधना के क्षेत्रों में गुरु की अनिवार्यता है। आध्यात्म एवं साधना का वैशिष्ट्य आरंभ से ही गुरु की गौरवमयी मूर्ति के रूप में स्वीकृत है। शिक्षा के उपरांत दीक्षा तथा दीक्षोपरांत दीक्षांत के बिना किसी भी क्रिया में अधिकार न होने के कारण कुलार्णवतंत्र आदि के अनुसार गुरु की विभिन्न व्याख्याओं के साथ महत्व वर्णित है- **"तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरुणा दीक्षितोभवेत्।"**

मोक्ष की प्राप्ति ही सम्प्रदाय का परम लक्ष्य है और इसकी प्राप्ति गुरु से दीक्षित हुए बिना संभव नही, अतः अनायास ही गुरु का महत्व सिद्ध होता है-

विना दीक्षां न मोक्षः स्यातदुक्तम शिवशासने ।
सा च न स्याद्विनाचार्यमित्याचार्यपरम्परा ।।

मुण्डकोपनिषद में स्पष्ट कहा गया है कि -**तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय। येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्वतो ब्रह्मविद्याम ।।** (1/2/13)

ब्रह्मगुरु संयत- इंद्रिय सम्पन्न प्रशांत-चित्त समीप में आये हुए शिष्य को तत्व के अनुरूप उस ब्रह्मविद्या का उपदेश दे। जिसके द्वारा शिष्य अक्षर पुरुष के स्वरूप को भलीभांति जान सके। इससे सुस्पष्ट है कि सिद्ध गुरुमुख से ही विद्या का लाभ करना चाहिए।

रुद्रयामल (उ 0 4/2) के अनुसार गुरु का स्वरूप वर्णन करते हुए कहा गया है कि- शांत, जितेंद्रिय, कुलीन, शुद्धवेश धारण करने वाला, पवित्र आचार- सम्पन्न, सुप्रतिष्ठित, शुद्ध, दक्ष, सुबुद्धि, आश्रमीअर्थात गृहस्थ, ध्यानिष्ठ, मंत्रार्थ का ज्ञान करने वाला निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ,मंत्र-तंत्र विशारद,रोगहीन, अहंकार रहित, निर्विकार, महापंडित, वाक् पति,श्रीसम्पन्न, सदा यज्ञ का विधान करने वाला, पुरश्चरण का संपादक , सिद्ध-हित और अहित-विवर्जित, सभी सुंदर लक्षणों से समन्वित, विशिष्ट व्यक्तियों के द्वारा समादृत,प्राणायामादि-सिद्ध, ज्ञानी, मौनी, वैराग्य सम्पन्न, तपस्वी, सत्यवादी, सदा ध्यान परायण, आगम के अर्थों का विशेषज्ञ, अपने धर्म के आचरण में तत्पर , अव्यक्त लिंगचिंहयुक्त,भावुक,कल्याणकर,दानपरायण,लक्ष्मीवान,धैर्य संपन्न एवं प्रभुता सम्पन्न गुरु होना चाहिए।

सनातन साहित्यों में एवं परम्परा से अतिशय विस्तार के साथ गुरु का स्वरूप वर्णित है। शिष्यों के हृदय के संताप को गुरु के द्वारा न्यून किया जाता है। शिष्यों को अभ्युदय योग और निःश्रेस मोक्ष प्रदान करने वाले गुरु श्रेष्ठ है।

विदलयति कुबोधम बोधयत्यगमार्थं
सुगतिकुगतिमार्गौ पुण्यपापे व्यनक्ति ।
अवगमयति कृत्याकृत्यभेदं गुरूर्यो
भवजल निधिपोस्ततं विना नास्ति कश्चित ।।

श्रेष्ठ गुरु हमारे मिथ्या ज्ञान को नष्ट कर देता है और हमें शास्त्रों में निहित ज्ञान-विज्ञान के श्रेष्ठ अर्थों का बोध करा देता है, सुगति और कुगति के मार्गों तथा कर्म और अकर्म का भेद समझा देता है। उसके विना और कोई भी हमें भी संसार सागर से पार नहीं कर सकता।

ध्यानमूलं गुरोर्मुर्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा।।

ध्यान का मूल है गुरु की मूर्ति, पूजा का मूल है गुरु का चरण, मंत्र का मूल है गुरु का वाक्य और मोक्ष का मूल गुरु की कृपा।

मुण्डकोपनिषद के अनुसार-

द्वे विद्ये वेदित्व्ये इति ह्यस्म यद ब्रह्मविदों वदंति, परा चैवापराच। तत्रा परा ऋग्वेदो यजुर्वेदःसामवेदो अथर्ववेदःशिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तम छन्दो ज्योतिष्मिती। अथ, परा, यया तदक्षरमभिगम्यते।।

(मुण्डकोपनिषद-1/1/4-5)

वह ब्रह्मज्ञाता उसे बतायेगा कि दो विद्याएँ जानने योग्य हैं। एक परा विद्या और दूसरी अपराविद्या जिनमें अपरा विद्या है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, धर्मविधि, व्याकरण, वैदिक शब्द-विवरण, छन्दः शास्त्र और ज्योतिष परा विद्या वह है, जिससे अक्षर ब्रह्म को जाना जाता है।

सम्प्रति सम्पूर्ण मानवता जीवन के उच्चतम लक्ष्य एवं आदर्शों से अलग होने के कारण नाना प्रकार के संकटों से आवृत है। भौतिकवाद की बढ़ती हुई आँधी ने जीवन मूल्यों को नए ढंग से परिभाषित कर सम्पूर्ण समाज को बर्बादी के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। सक्षम गुरुसत्ता, आचार्य परम्परा एवं व्यास परम्परा ही इस विकराल समस्या से हमें मुक्ति दिला सकती है।

आषाढ़ मास की शुक्लपक्ष की पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा या गुरु पूर्णिमा के रूप में जानी जाती है। यह पावन पवित्र दिवस आधारभूत सनातन ग्रंथों के रचयिता महर्षि वेदव्यास के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता हैं।इस अमृत महोत्सव पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के योग संकाय/योगविभाग द्वारा तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय "व्यास महोत्सव" का आयोजन दिनांक जुलाई **2021** को किया जा रहा है जिसका प्रतिपाद्य विषय है- " गुरु की महत्ता "

<u>उप विषय:</u>

(1) भारत के पुनः विश्व गुरु बनने का आदर्श स्वरूप
(2) राष्ट्र निर्माण में गुरु की भूमिका
(3) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: गुरु की अवधारणा, स्वरूप एवं निर्माण प्रक्रिया
(4) भारतीय चिंतन धारा में गुरु शिष्य का संबंध
(5) प्राचीन गुरु परंपरा का वर्तमान प्रासंगिकता
(6) गुरु शिष्य परंपरा एवं स्वास्थ्य संवर्धन
(7) पारंपरिक विद्या एवं गुरु शिष्य परम्परा

प्रस्तावित सम्मानित अतिथियों एवं विद्वानों की सूची

1- आचार्य पी .वी . कृष्ण भट्ट कुलाधिपति, उडीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट
2- आचार्य अविनाश चन्द्र पाण्डेय निदेशक – अन्तर विश्वविद्यालय योग विज्ञान केंद्र, बेंगलुरु एवं अन्तर विश्वविद्यालयीय त्वरक केंद्र स्वायत्त संस्थान विश्वविद्याल अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
3- आचार्य श्रीमती पुष्पा दीक्षित संस्थापक – पाणिनी शोध संस्थान, बिलासपुर
4- आचार्य जटा शंकर अध्यक्ष – अखिल भारतीय दर्शन परिषद्
5- श्री आदित्य सत्संगी संस्थापक एवं अध्यक्ष , सत्तोंलोजी संस्थान , यू यस ए
6- आचार्य कृष्णकांत शर्मा पूर्व संकायाध्यक्ष, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, बी.एच.यू., वाराणसी
7- आचार्य विंदेश्वरी प्रसाद मिश्र –पूर्व संकायाध्यक्ष, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, बी. एच. यू., वाराणसी
8- आचार्य रामकृष्ण गोस्वामी संस्थापक – भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, नई दिल्ली
9- आचार्य अंबिकादत्त शर्मा, आचार्य एवं अध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग, डॉ . हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म.प्र.
10- आचार्य काशीनाथ न्योपाने आचार्य – दर्शनशास्त्र एवं संस्कृत विभाग,नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय, काठमांडू
11- आचार्य एन वी .रघुराम . संस्थापक योग भारती यू. एस. ए.
12- आचार्य सुशीम दुबे – आचार्य, दर्शन शास्त्र विभाग, नवनालंदा महाविहार संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
13- डॉ सत्य प्रकाश पाठक– सहायक प्राध्यापक ,योग अध्ययन केंद्र,हिमाचल विश्वविद्यालय, शिमला
14- डॉ. गणेश प्रसाद सेमवाल , योगाचार्य- वियतनाम
15- आचार्य पूरण तिवारी – प्रधान आचार्य शिव शक्तिधाम ,मारीशस
16- आचार्य गौरव वोहरा- आचार्य योग एवं भारतीय संस्कृति, साइप्रस गणराज्य एवं हेलेनीक गणराज्य (ग्रीस)

अधिक जानकारी के लिए यहाँ देखे
http://www.igntu.ac.in/sattology
For Registration

Click Here For Registration
https://docs.google.com/forms/d/1_x716WqxEvlnzESZOzIjtexDkcErKjZYwb3C-dK7ECk/edit?ts=60f26414

Or Scan the QR

Contact

hrpandey@igntu.ac.in
Dean.yoga@igntu.ac.in
Hod.yoga@igntu.ac.in
+91 9450439408
+91 9325580874
+91 9584234600